आत्मिक शक्तियां जागृत करना जरूरी - दादी रतनमोहिनी

ट्रांसपोर्ट एवं ट्रेवल्स प्रभाग की ओर से संपूर्ण सुरक्षा के लिए
आध्यात्मिकता विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सेमीनार

माउंट आबू, 17 जुलाई। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा है कि जीवन यात्रा को सुखद व शांतिमय बनाने के लिए आंतरिक आत्मिक शक्तियों को जागृत कर उन्हें आचरण में लाने की जरूरत है। यह बात उन्होंने ब्रह्माकुमारी संगठन के ज्ञान सरोवर परिसर में ट्रांसपोर्ट एवं ट्रेवल्स प्रभाग की ओर से संपूर्ण सुरक्षा के लिए आध्यात्मिकता विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सेमीनार के उदघाटन सत्र को संबोधित कर रही थीं।

उन्होंने कहा कि यह सृष्टि भी एक रंगमंच की तरह है जहां हर आत्मा देह में अवतरित होकर संस्कारों के अनुरूप कर्म करते हुए अपनी अपनी भूमिका अदा कर रही है। आध्यात्मिक शक्ति से हरेक के प्रति सहयोग की भावनाएं उत्पन्न होती हैं। जिससे प्राप्त दुआओं के आधार पर यात्रा को निर्विघ्न रूप से तय कर सकते हैं। हम आत्मा संसार में कहां से आई हैं, किसलिए आई हैं, कहां जाना है, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? इस बात को सही रूप से जानने के बाद ही जीवन यात्रा को सुखद बनाया जा सकता है। कर्मों में श्रेष्ठता तभी आएगी जब ऊंच ते ऊंच परमपिता परमात्मा के साथ हमारे मन की तार जुटे। परमात्मा से प्राप्त शक्तियों के आधार पर ही जीवन के तनाव व संघर्ष को दूर किया जा सकता है।

जबलपुर वेस्ट सेंट्रल रेल्वे चीफ पर्सनल ऑफिसर डॉ. पी.एल.बंकर ने कहा कि यातायात व परिवहन से जुड़े विभाग देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, यदि इस क्षेत्र से जुड़े लोग आत्मिक उन्नति से संपन्न होंगे तो परिणाम अधिक सकारात्मक व लाभप्रद होगा। आध्यात्मिक ऊर्जा से संपन्न यह परिसर अपने आप में अद्वितीय व अलौकिक अनुभूति करवाकर हर व्यक्ति को श्रेष्ठ बनने को प्रेरित करता है। जिस प्रकार ब्रह्माकुमारी संगठन एक विशाल परिवार की भांति कार्य कर रहा है उसी प्रकार घर, परिवार में व विचारों में एकता होने से कोई भी बड़ा कार्य सहज रूप से संपन्न किया जा सकता है।

मुंबई सेंट्रल रेल्वे के चीफ क्लेम ऑफिसर बी.एन.वाघमारे ने कहा कि बुद्धि की स्वच्छता से ही ट्रांसपोर्ट का ट्रांसफार्मेशन होगा। तनाव या क्लेश का कारण अपेक्षाएं व अहंकार है। जीवन को महानता व प्रसन्नता की ओर ले जाना ही हमार उद्देश्य होना चाहिए। जीवन यात्रा को सुचारू रूप से चलाने के लिए राजयोग का अभ्यास करना आवश्यक है। जिससे खोई हुई शांति को फिर से हासिल किया जा सकता है।

मंडीदीप नगरपालिकाध्यक्ष विपिन भार्गव ने कहा कि संस्थान में आध्यात्मिक ऊर्जा का वातावरण निसंदेह ही मनुष्य के वैचारिक धरातल को सकारात्मकता की ओर मोड़ने में सक्षम है। इस आध्यात्मिक ज्ञान से हम अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाकर सुखद समाज की स्थापना कर सकते हैं। वर्तमान परिवेश में अध्यात्म को आचरण में लाने की नितांत आवश्यकता है।

प्रभाग अध्यक्ष ओमप्रकाश गुलाटी ने कहा कि कार्यक्षेत्र में आने वाली परिस्थितियों से उत्पन्न तनाव को कम करने के लिए राजयोग का अभ्यास संजीवनी बूटी की तरह कार्य करता है। साईलेंस की शक्ति से हमारी आंतरिक शक्तियों का विकास होता है जिससे जीवन यात्रा के हर मोड़ पर किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए मानसिक धरातल सक्षम हो जाता है।

राष्ट्रीय संयोजिका बीके दिव्यप्रभा बहन ने अध्यात्म के जरिए श्रेष्ठ विचार, शुद्ध खान-पान, श्रेष्ठ कर्म करने को प्रेरित करते हुए कहा कि यातायात से जुड़े लोगों की जिम्मेदारी अधिक महत्वपूर्ण होती है क्योंकि उनके हाथों में अनेकों की जीवनडोर होती है। उनकी अपने कार्य के प्रति जरा सी लापरवाही से अनेक लोगों के जीवन की ज्योति बुझ सकती है। मुख्यालय संयोजक बीके सुरेश ने भी विचार व्यक्त किए।